B.N. College, Bhagalpur

A Constituent unit of Tilka Manjhi Bhagalpur University

Department of History

Topic : Hyder Ali (PPT)

B.A. Part-3

Prepared by : Sri Pinku kumar

Asst. Professor (Dept. of History)

B.N. College Bhagalpur

Contact (whatsApp) no- 7982166260

Email id- kpinku348@gmail.com

हैदर अली की राजनीतिक उपलब्धियां

भूमिका

- मैसूर राज्य के अंतर्गत सर्वप्रथम हैदर अली एक सैनिक था। (मैसूर राज्य विजयनगर साम्राज्य के पतन के पश्चात वाडेयर वंश के अंतर्गत 1565 में स्वतंत्र राज्य बना)। डिंडीगुल के फौजदार के रूप में उसने प्रशंसनीय कार्य किए उसकी अन्य सफलताएं थी- पश्चिमी पद्धति पर अपने सैनिकों का प्रशिक्षण देना एवं 1755 ई. में फ्रांस की सहायता से एक आधुनिक शस्त्रागार की स्थापना करना।
- 1759 ई. में मैसूर की राजधानी श्रीरंगपट्टनम को मराठों के विरुद्ध बचाने में उसे नंजराज द्वारा 'फतेह हैदर बहादुर' की उपाधि प्रदान की गयी। नंजराज मैसूर के शासक चिक्का कृष्ण राजा प्रथम का प्रधानमंत्री एवं वास्तविक शासक था। 1761 ई. में नंजराज को पराजित कर हैदर अली ने सत्ता पर कब्जा कर लिया लेकिन कृष्ण राजा को कानूनी तौर पर शासक मानता रहा।

हैदर अली का उद्भव

- 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मुगल शासन के पराभव के कारण केंद्रीय सत्ता क्षीण हो गई और प्रांतीय शासक अपनी सत्ता स्थापित करने लगे थे। उत्तर भारत में बंगाल व अवध में अंग्रेज, दक्षिण में निजाम, मराठे एवं यूरोपीय शक्तियां उभर रही थी।
- इन्हीं परिस्थितियों में मैसूर में हैदर अली ने अपनी सत्ता स्थापित की। इस समय इतिहास की खास प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है, केंद्रीय सत्ता के कमजोर होने से जो क्षेत्रीय शक्तियों उभर कर आई और उसका नेतृत्व राजघराने के स्थान पर सामान्य वर्ग के योग्य लोगों ने किया।
- मैसूर की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी कि दक्षिण की सारी रियासतें चाहती थी कि वह स्वतंत्र एवं शक्तिशाली राज्य बना रहे। मद्रास सरकार यह नहीं चाहती थी कि मराठे मैसूर को जीत ले और उनकी सीमाओं के पास आ जाए।

हैदर अली का उद्भव-1

- साथ ही मराठे चाहते थे कि यूरोपीय शक्तियां समुद्र तट तक ही सीमित रहे। निजाम चाहता था कि मैसूर पर न तो कंपनी का अधिकार हो और न ही मराठा का। अपने बचाव व शक्ति संतुलन की दृष्टि से मैसूर के अस्तित्व को सब बनाए रखना चाहते थे। इन राजनीतिक परिस्थितियों ने हैदर अली को बहुत सहायता पहुंचाई।
- हैदर अली ने मराठों के विरुद्ध अंग्रेजों से समझौता किया और अंग्रेजों के विरुद्ध मराठे, निजाम और फ्रांसीसियों का सहयोग प्राप्त किया। उसकी नीति के तीन मुख्य पहलू थे-
  - प्रथम वह सभी यूरोपीय शक्तियों के बीच एक संतुलन रखें।
  - दूसरा सब यूरोपीय शक्तियों से अपने लिए सैनिक सामान प्राप्त करें।
  - तीसरा युद्ध के समय उनसे सहायता प्राप्त करें।

ब्रिटिश द्वारा मैसूर पर नियंत्रण

❖जब ब्रिटिश, भारत की सर्वोच्च यूरोपीय शक्ति बनने की रणनीति बना रहे थे तथा भारत में अपनी सत्ता का विस्तार चाह रहे थे। ठीक इसी समय 1765 ई. में बंगाल की दीवानी मिलने के पश्चात अब दक्षिण में विस्तार व नियंत्रण आवश्यक हो गया था। इसी कारण अंग्रेज और मैसूर के बीच चार युद्ध हुए और अंततः अंग्रेज़ों ने मैसूर पर अधिकार कर लिया।

कारण

➢दक्षिण में मैसूर अंग्रेजों के प्रमुख विरोधी शक्ति के रूप में उभर रहा था और यह ब्रिटिश साम्राज्य के दक्षिण विस्तार में एक बहुत बड़ा बाधक था।

➢ब्रिटिश साम्राज्य के दक्षिण में प्रसार का महत्वपूर्ण कारण आर्थिक व राजनीतिक आवश्यकताएं थी।

➢हैदर व टीपू द्वारा फ्रांसीसियों से संबंध ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए खतरा था

हैदर अली व ब्रिटिश के मध्य संघर्ष

❖मैसूर में अंग्रेजों के राजनीतिक महत्वकांक्षा की वजह से चार आंग्ल- मैसूर युद्ध हुए जिनमें प्रथम दो युद्धों का नेतृत्व हैदर अली ने किया, जो कि निम्न है –

प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध 1767- 69 ई.

कारण

- हैदर अली द्वारा अंग्रेजी शक्ति के लिए चुनौती उत्पन्न करना।
- 1766 में हैदर अली के विरुद्ध मराठे, निज़ाम और अंग्रेजों का त्रिगुट गठबंधन बनना।
- अपनी कूटनीतिक कौशल से हैदर द्वारा मराठों को त्रिगुट से अलग किया जाना।
- अंततः कई स्थानों पर अंग्रेज-हैदर के बीच संघर्ष हुआ और 1769 ई. में अंग्रेजों द्वारा मद्रास की सुरक्षात्मक संधि की गई।

परिणाम

- इस संधि से दोनों ने एक दूसरे के जीते प्रदेश वापस किए। आवश्यकता पड़ने पर एक-दूसरे को सैनिक सहायता देने का वचन दिया।
- संधि ने अंग्रेजों की प्रतिष्ठा को काफी चोट पहुंचाई। मैसूर पर नियंत्रण का उनका सपना पूरा नहीं हो सका।
- यह संधि दो मित्रों के बीच ना थी बल्कि अपनी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए की गई थी।

द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध 1780- 84 ई.

कारण

- 1771 ई. में मराठों ने हैदर पर आक्रमण किया तब अंग्रेजों ने मैसूर की कोई सहायता नहीं की। इस तरह 1769 ई. की संधि का उल्लंघन अंग्रेजों ने किया।

कारण

- अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के चलते यूरोप में फ्रांस और ब्रिटेन एक-दूसरे से उलझ पड़े। भारत में भी अंग्रेजों ने फ्रांसीसी बस्तियां- माही और गुंटूर पर अधिकार का प्रयास किया। यह क्षेत्र हैदर अली के नियंत्रण में था।
- इस समय प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध चल रहा था। अतः हैदर ने अंग्रेजो के विरुद्ध मैसूर, निजाम और मराठा का त्रिगुट बनाया। यही वह समय है जब अंग्रेजों की स्थिति सर्वाधिक दयनीय थी।

परिणाम

- आरंभिक युद्ध में हैदर अली सफल हुआ किंतु अंग्रेजों द्वारा कूटनीति से मराठे और निजाम को त्रिगुट से अलग कर दिया गया। फलतः हैदर अंग्रेजों से अकेला संघर्ष करता रहा। 'पोर्टोनोवो के युद्ध' में पराजित हुआ और 1782 में उसकी मृत्यु हो गई।

परिणाम

- टीपू ने युद्ध को जारी रखा। अंततः टीपू और अंग्रेजों के बीच 1784 ई. में 'मंगलौर की संधि' द्वारा युद्ध समाप्त हुआ।
- संधि के द्वारा दोनों ने जीते हुए प्रदेश वापस कर दिए और कैदियों को भी वापस कर दिया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि यद्यपि हैदर अली अनपढ़ था, तथापि बहुत कुशल शासक और योग्य सेनापति सिद्ध हुआ। वह राज्य के सारे काम अपने सामने बहुत द्रुत गति से निबटाता था। उसने प्रशासन में सुधार कर मैसूर को एक महत्वपूर्ण शक्तिशाली राज्य बनाया । साथ ही उस ज़माने के मुस्लिम शासकों में हैदर अली सबसे सहिष्णु शासक माना जाता था।